शोध आलेख : हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा की परंपरा और स्वरूप का विकास / डॉ. आशीष कुमार यादव

Arjun Kumar शनिवार, सितंबर 30, 2023

हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा की परंपरा और स्वरूप का विकास

- डॉ. आशीष कुमार यादव

शोध सार : यह हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा विधा का संक्षिप्त इतिहास है। समाज में जैसे विज्ञान का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है और उसकी महत्ता से लोग रू-ब-रू हो रहे हैं, वैसे ही अब विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ भी इस विधा को महत्व दे रही हैं। इनमें अब इस विधा से संबंधित विभिन्न लेख दिन-प्रतिदिन प्रकाशित हो रहे हैं। यदि 'स्वतंत्र भारत', 'राष्ट्रीय सहारा', 'धर्मयुग', 'जनसत्ता', 'हंस', 'जनधर्म', 'शिविरा' जैसी पत्र-पत्रिकाओं में कभी-कभी विज्ञान कथाओं का प्रकाशन होता है तो सुप्रसिद्ध पत्रिका 'विज्ञान प्रगति' के प्रत्येक अंक में हिंदी की एक मौलिक विज्ञान कथा व अनुदित विज्ञान कथा बराबर प्रकाशित हो रही है। इसके अतिरिक्त 'विज्ञान कथा', 'विज्ञान आपके लिए' जैसी पत्रिकाएँ लगातार विज्ञान कथाओं का प्रकाशन कर रही हैं। लेकिन यह बात अब भी सोचनीय है कि जो स्थान पाश्चात्य जगत में विज्ञान कथा व कथाकारों का है, वह स्थान अभी भारत देश में नहीं है। इस यात्रा में हमें कई मंजिलों से गुजरना पड़ेगा, तभी हम वह मुकाम प्राप्त कर सकते हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि 21वीं सदी के अंत तक यह मुकाम विज्ञान कथा और कथाकार अवश्य ही प्राप्त कर लेंगे।

बीज शब्द : विज्ञान कथा, अंतरिक्ष, फोटोफोन, इंटरनेट, प्रौद्योगिकी, मोबाइल, प्रतिरोपण, सिंदूरी ग्रह, मृत्युंजयी, हरा मानव, देहदान, रोबोट, टेस्टट्यूब बेबी, मानव क्लोन, ऑपरेसन जेनेसिस, कालजयी यात्रा, कम्प्यूटर की मौत।

मूल आलेख : हिंदी विज्ञान कथाओं को 'साइंस फैंटेसी' और 'साइंस फिक्शन' दो वर्गों में बाँटा गया है। यदि दोनों की प्रवृत्तिगत विशेषताओं को देखा जाए तो 'साइंस फैंटेसी' में कथाकार स्वच्छंद कल्पना करता है, लेकिन इसमें कथाकार विज्ञान के नियमों से सीमाबद्ध नहीं रहता है। साइंस फैंटेसी में कथा वैज्ञानिकता का कलेवर लिए हुई दिखाई पड़ती है, लेकिन उसके सृजन में विज्ञान की कोई निश्चित भूमिका नहीं होती है। इस वर्ग में भविष्यगत कल्पना से युक्त कथानक को अभिपर्याय रूप में संबंधित विज्ञान कथाओं को लिया जाता है। जबकि साइंस फिक्शन में वैज्ञानिक तथ्यों का कथानक में स्वच्छंद प्रयोग नहीं किया जाता है। साइंस फिक्शन में वैज्ञानिक तथ्यों का प्रयोग एक मर्यादित सीमा के भीतर रहकर कथानक को गढ़ा-बुना जाता है। इनके वैज्ञानिक तथ्यों के प्रयोग में वैज्ञानिक विश्वसनीयता बराबर बनी रहती है। इनमें ऐसे ही वैज्ञानिक तथ्यों का प्रयोग करना उचित होगा, जो विज्ञान सत्यसिद्ध कर चुका हो। मंजुलिका लक्ष्मी के अनुसार, "वैज्ञानिक विश्वसनीयता ही इसकी (विज्ञान कथाओं की) रीढ़ होती है।"[1]

हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा की परंपरा के विकास को मूलतः तीन चरणों में बाँटा जा सकता है। पहला चरण, स्वतंत्रता के पूर्व की विज्ञान कथाएँ; दूसरा चरण, स्वतंत्रता के बाद की विज्ञान कथाएँ; तीसरा चरण, समकालीन समय की विज्ञान कथाएँ हैं। इसको दूसरे शब्दों में कहा जाए तो शुरुआती दौर की विज्ञान कथाएँ; दूसरा चरण, विकास के दौर की विज्ञान कथाएँ; तीसरा चरण, विकसित दौर की विज्ञान कथाएँ हैं। हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा की परंपरा का यह विभाजन कोई लक्ष्मण रेखा नहीं है। हाँ, यह जरूर है कि विज्ञान कथाओं में प्रवृत्तिगत परिवर्तन को देखते हुए और इसकी समृद्ध व लम्बी परंपरा को विभिन्न चरणों में विभाजित करके इनका अध्ययन और विश्लेषण करना सरल हो जाता है।

हिंदी साहित्य में स्वतंत्रता के पूर्व या शुरुआती दौर की विज्ञान कथाओं पर पाश्चात्य विज्ञान कथाओं का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। जिस प्रकार पाश्चात्य देशों के शुरुआती दौर में अंतरिक्ष, ग्रहों, नक्षत्रों आदि से संबंधित विभिन्न विज्ञान कथाएँ लिखी गयीं, उसी प्रकार हिंदी साहित्य में भी विज्ञान कथाएँ लिखी गयीं। इस दौर में मौलिक विज्ञान कथाओं का अभाव रहा है। हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा लेखन की परंपरा की शुरुआत बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक से होता है। यदि गौर से देखा जाए तो पं. अम्बिकादत्त व्यास द्वारा संपादित पत्रिका 'पीयूष प्रवाह' में धारावाहिक के रूप में 'आश्चर्य वृत्तांत' (1883 ई.) हिंदी विज्ञान कथा सर्वप्रथम प्रकाशित होती हैं। कालक्रम की दृष्टि से देखने पर यह हिंदी साहित्य की पहली विज्ञान कथा मालूम पड़ती है, जबकि कुछ विज्ञान कथाकार और आलोचक सुप्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' के भाग-1, संख्या-7 में प्रकाशित बाबू केशव प्रसाद सिंह की विज्ञान कथा 'चंद्रलोक की यात्रा' (1905 ई.) को हिंदी साहित्य की पहली विज्ञान कथा मानते हैं। यदि दोनों हिंदी विज्ञान कथाओं के कथानकों का विश्लेषण किया जाए तो 'आश्चर्य वृत्तांत' पर जूल्स बर्ने का उपन्यास 'जर्नी टू सेन्टर ऑफ द अर्थ' का प्रभाव दिखाई पड़ता है। वहीं पर 'चंद्रलोक की यात्रा' पर जूल्स बर्ने के उपन्यास 'फाइव वीक्स इन ए बैलून' का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

कुछ लोग पाश्चात्य विज्ञान कथाओं के प्रभाव के कारण इन्हें हिंदी साहित्य की पहली विज्ञान कथा मानने से इनकार करते हैं। मुझे जहां तक प्रतीत होता है कि कोई भी विधा एकाएक उत्पन्न नहीं हो सकती है।

किसी भी रचना को विभिन्न पड़ावों से गुजरना होगा, तभी वह अपना मौलिक स्वरूप ग्रहण करती है। मात्र पाश्चात्य के प्रभाव के कारण इसे हिंदी की पहली विज्ञान कथा मानने से इनकार करना शायद अतार्किक होगा। इन दोनों विज्ञान कथाओं में भारतीय सामाजिक परिवेश व उसकी प्रवृत्तियों का वर्णन मिलता है। यहाँ तक कि इनके पात्र भी भारतीय नामकरण के अनुकूल हैं।

इन दोनों हिंदी विज्ञान कथाओं के कथानक व कालक्रम को यदि ध्यान से देखा जाए तो कालक्रम की दृष्टि से 'आश्चर्य वृत्तांत' (1883 ई.) हिंदी साहित्य की पहली विज्ञान कथा मालूम होती है। लेकिन शिल्प की दृष्टि से 'चंद्रलोक की यात्रा' हिंदी साहित्य की पहली विज्ञान कथा प्रतीत होती है। क्योंकि इस कहानी के कथानक की विषय-वस्तु का चुनाव काफी सधा हुआ है और इसमें तत्कालीन समाज पर सूदखोरों का प्रभाव वर्णित किया गया है। इस कहानी की संभाव्यता आज हकीकत का स्वरूप ग्रहण कर चुकी है।

हिंदी साहित्य में पहली विज्ञान कथा के विषय में डॉ. राजकुमारी उपाध्याय का मानना है कि "'चंद्रलोक की यात्रा' और 'आश्चर्यजनक घंटी' को हिंदी की प्रारम्भिक वैज्ञानिक कहानियाँ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ये दोनों ही विदेशी साहित्य फ्रांसीसी और अमेरिकन साहित्य से उधार ली गयी हैं।"[2]

प्रेमवल्लभ जोशी की विज्ञान कथा 'छाया पुरुष' 1915 ई. में प्रकाशित हुई थी। यह प्रकाश के अपवर्तन पर आधारित कहानी है और इसमें रहस्यमयता पूरी तरह विद्यमान है। दो पहाड़ों के बीच बने हुए एक कुंड में ज्यों-ज्यों पानी भरता जाता है, एक मनुष्य की छाया जैसे आगे बढ़ती हुई दिखाई देती है, लेकिन जैसे-जैसे पानी कम होने लगता है, छाया अदृश्य हो जाती है। गाँव वाले कुंड में भूत का वास समझ कर भय से घबरा उठते हैं। बरकिट साहब गाँव वालों के समक्ष एक प्रयोग करके रहस्य का अनावरण कर देते हैं।

हिंदी विज्ञान कथा साहित्य की परंपरा को यदि ध्यान से देखा जाए तो शुरुआती दौर (1900 ई.) से लेकर विकास के दौर (1950 ई.) तक पाश्चात्य विज्ञान कथाओं से प्रेरित व प्रभावित हिंदी में कई विज्ञान कथाएँ लिखी गयी हैं। इसी समय कई पाश्चात्य विज्ञान कथाओं का अनुवाद भी प्रकाशित किया गया था। अनेक वर्षों से आ रही इस परंपरा को सर्वप्रथम राहुल सांकृत्यायन तोड़ते हैं। पं. राहुल सांकृत्यायन द्वारा 'बाईसवीं सदी' 1924 ई. में एक लघु उपन्यास लिखा गया, जो किताब महल इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक में न केवल विश्व सरकार और विश्व भाषा की संकल्पना विद्यमान है, बल्कि फोटोफोन (विडियो फोन), मोबाइल, इंटरनेट आदि की संकल्पना भी है। आजकल काफी हद तक उनकी सभी संकल्पनाएँ साकार हो चुकी हैं। यद्यपि पं. राहुल सांकृत्यायन समाजवादी विचारधारा से प्रभावित थे, तथापि उसी के अनुरूप वे अपने इस लघुकाय उपन्यास में 2124 ई. के समाज का वर्णन करते हैं, यथा – "भूमंडल में सभी जगह अब समता का राज्य है। अब मनुष्य बराबर है। स्त्री-पुरुष बराबर हैं। सभी जगह श्रम और भोग का समत्व मूल मंत्र रखा गया है। न अब भूमंडल में जमींदार हैं, न सेठ-साहूकार हैं, न राजा है।, न प्रजा, न धनी, न निर्धन, न ऊँच हैं, न नीच। सारे भूमंडलवासियों का एक कुटुम्ब है। पृथ्वी की सभी स्थावर जंगम संपत्ति इसी कुटुम्ब की संपत्ति है।"[3]

इस लघुकाय उपन्यास के पूरे कथानक में भारतीय परिवेश का परिचय मिलता है। इसमें भारत के विज्ञान व प्रौद्योगिकी की प्रगति, शिक्षा व्यवस्था, ग्रामीण संस्कृति व शहरी संस्कृति का परिचय मिलता है। पं. राहुल सांकृत्यायन अपने इस लघु उपन्यास में तत्कालीन समाज के जीवन के विषय में वर्णन करते हुए लिखते हैं – "मनुष्य कुल चार घंटे काम करके ही सारी आवश्यकताओं को प्राप्त कर बाकी बीस घंटे जीवन के अन्य आनंदों के उपभोग में लगाता है।"[4]

विज्ञान कथा की इस परंपरा में डॉ. नवल बिहारी मिश्र और यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' का इस क्षेत्र में आना इस विधा के लिए नव-जीवन की प्राप्ति के समान था। इन्होंने अपने प्रतिभा द्वारा विज्ञान कथा को मौलिक व आधुनिक स्वरूप प्रदान किया है। इन दोनों के विज्ञान की पृष्ठभूमि और उसका अध्ययन विज्ञान कथा के रचनाकारों के रचना संसार पर कथा की सृष्टि पर विस्मयकारी प्रभाव डालती है। डॉ. नवल बिहारी मिश्र के बहुमूल्य योगदान के विषय में डॉ. बाल फोंडके कहते हैं कि "डॉ. नवल बिहारी मिश्र ने विशुद्ध विज्ञान कथाओं की रचना की और हिंदी विज्ञान कथा के सही स्वरूप की प्राण-प्रतिष्ठा की। भाषा, शिल्प, कथानक और विज्ञान की आत्मा के कारण इनकी कहानियाँ वास्तविक विज्ञान कथाएँ हैं।"[5]

यदि हिंदी विज्ञान कथा के वास्तविक स्वरूप प्रदान करने के लिए डॉ. नवल बिहारी मिश्र को याद किया जाता है तो यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' को हिंदी विज्ञान कथाओं के भारतीयकरण के लिए याद किया जाता है। इन्होंने विज्ञान कथाओं को भारतीय परिवेश व देशकाल, वातावरण के अनुरूप ढाला है। डॉ. अरविंद मिश्र इनके योगदान की चर्चा करते हुए कहते हैं - "यदि भावी विज्ञान कथा के स्वरूप निर्धारण में डॉ. नवल बिहारी मिश्र का अमूल्य योगदान है तो यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' ने इसे देशज स्वरूप प्रदान किया।"[6]

डॉ. नवल बिहारी मिश्र का उपन्यास 'अपराध का पुरस्कार' 1962 ई. में प्रकाशित हुआ था। इनकी प्रमुख हिंदी विज्ञान कथाएँ 'अधूरा आविष्कार', 'आकाश का रास्ता', 'हत्या का उद्देश्य' इनकी कथा संग्रहों में संकलित हैं। 'सरस्वती', 'विज्ञान लोक' और 'त्रिपथगा' में प्रकाशित 15 हिंदी विज्ञान कथाएँ 'अधूरा आविष्कार' में संकलित हैं - 'अधूरा आविष्कार', 'मंगल ग्रह की पहली यात्रा', 'भूत और प्रेत', 'हिमसमाधि', 'पथभ्रष्ट', 'अपराध और अपराधी', 'अस्पष्ट सीमा', 'काल-भ्रंश', 'दूसरी दुनिया', 'बेटी का ब्याह', 'चौथी पीढ़ी', 'पुनर्जन्म', 'सफर का साथी', 'ऊँची उड़ान', 'शुक्र ग्रह की यात्रा' आदि।

हिंदी विज्ञान कथाओं को भारतीय स्वरूप प्रदान करने वाले यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' की पहली पुरस्कृत विज्ञान कथा 'वैज्ञानिक की पत्नी' (1937 ई.) है। 'अशोक' जी की विज्ञान कथाएँ 'हंस', 'माया', 'विशाल भारत', 'सरस्वती' आदि पत्र-पत्रिकाओं में छपती रही हैं। आँखों के प्रतिरोपण पर आधारित उपन्यास चक्षुदान (1949 ई.), कृत्रिम गेहूँ बनाने के प्रयोग पर आधारित उपन्यास है 'अन्न का आविष्कार' (1956 ई.) 'अपराधी वैज्ञानिक (1968 ई.), 'हिम सुंदरी' (1971 ई.), 'नियोगिता नारी' (1987 ई.) इनके प्रमुख हिंदी वैज्ञानिक उपन्यास हैं। अशोक जी विज्ञान के विद्यार्थी थे। अतः वैज्ञानिक भावभूमि पर उन्होंने अपनी कथाओं का ताना-बाना बुना। भावी विज्ञान की संभावनाओं की तलाश करते हुए भी इनकी कृतियों में कुमाऊँ का आंचलिक परिवेश सर्वत्र विद्यमान है। अशोक जी की हिंदी विज्ञान कथाओं के पाँच संग्रह प्रकाशित हैं - 'अस्थिपंजर' (1947 ई.) 'शैल गाथा' (1998 ई.), 'भेड़ और मनुष्य' (1956 ई.), 'अप्सरा का सम्मोहन' (1967 ई.) 'श्रेष्ठ वैज्ञानिक कहानियाँ' (1948 ई.)। इनके इस नवीनतम संग्रह में इनकी 17 विज्ञान कथाएँ संकलित हैं - 'वैवाहिक कम्प्यूटर', 'परजीवी कीड़ा', 'एलर्जी', 'अनूप सिंह की खोपड़ी', 'दुराग्रह', 'चोर दलदल', 'बनकटिया का भयंकर भूत', 'प्रतिभा का पलायन', 'रोगाणु व्यवसायी', 'विषदंत', 'दुरानुभूति', 'निर्मल आकाश की काली घटा', 'आवश्यकता है व्यवहार कुशल की', 'तथाकथित', 'लूला अंतर्मन', 'मशीन का निर्णय', 'वत्सकामा का कटरा' आदि।

हिंदी साहित्य के विज्ञान कथा विधा को सुविकसित करने में डॉ. नवल बिहारी मिश्र और यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' का महत्वपूर्ण योगदान है। इन्होंने विज्ञान कथा विधा को वास्तविक स्वरूप प्रदान करके इसकी परंपरा को अपनी मौलिक रचनाओं द्वारा समृद्ध बनाने का कार्य किया है। यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' ने हिंदी विज्ञान कथाओं को जहाँ देशज स्वरूप प्रदान किया है, वहीं डॉ. नवल बिहारी मिश्र ने विज्ञान कथाओं का सही मार्गदर्शन प्रदान करके सही दशा व दिशा प्रदान किया है। इनके योगदान को देखते हुए हिंदी साहित्य की विज्ञान कथा की विधा सदैव ऋणी रहेगी।

पाश्चात्य विज्ञान कथा साहित्य की उत्कृष्ट कृतियों को हिंदी में अनुवाद करके पाठकों के सामने प्रस्तुत करने में डॉ. नवल बिहारी मिश्र का महत्वपूर्ण योगदान है। वे विज्ञान की पृष्ठभूमि से संबंधित थे। अतः विज्ञान की नयी-नयी जानकारी से बराबर अवगत रहते थे। अतः अनुदित विज्ञान कथाओं को पाठकों तक पहुँचाने में आपने बहुत उल्लेखनीय कार्य किया है। इंडियन प्रेस इलाहाबाद से किशोर सिरीज की 17 विज्ञान कथाएँ प्रकाशित हुई हैं। इनमें निम्नलिखित कृतियाँ उल्लेखनीय रूप से सम्मिलित हैं। सूर्यकांत साह ने जूल्स बर्ने की विज्ञान कथा 'From the Earth to Moon' का अनुवाद 1865 ई. में 'चंद्रलोक की यात्रा' नाम से

किया था। जूल्स बर्ने ने इस उपन्यास में 'गन क्लब' की रचना की थी, जिसका नायक प्रेसीडेंट नार्विकेन है। एक दिन प्रेसीडेंट नार्विकेन कहता है – "एक विशेष प्रकार की तोप का निर्माण करके क्या चंद्रमा पर गोला फेंकना संभव नहीं है?.... मैंने इस प्रश्न के सभी पहलुओं पर गौर किया है और इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि यदि कोई गोला 12,000 गज प्रति सेकेंड की प्रारम्भिक गति से चंद्रमा की तरफ लक्ष्य करके छोड़ा जाएगा तो वह अवश्य वहाँ पहुँचेगा।"[7]

डॉ. संपूर्णानंद एवं आचार्य चतुरसेन शास्त्री (1891-1960 ई.) ने विज्ञान कथा क्षेत्र में प्रवेश कर विविध हिंदी विज्ञान कथाएँ हिंदी पाठकों को उपलब्ध करायीं। अतः हिंदी साहित्य के विज्ञान कथा की परंपरा इनकी हमेशा ऋणी रहेगी। डॉ. संपूर्णानंद ने अपने ज्योतिष ज्ञान के आधार पर लघु उपन्यास 'पृथ्वी से सप्तर्षि मंडल' (1953 ई.) लिखा। इन्होंने अपने ज्योतिष ज्ञान के आधार पर पृथ्वी से दूर ग्रहों एवं पिंडों पर भारतीयता की छाप छोड़ी है और वहाँ पर अपने ज्ञान के आधार पर प्राचीन संस्कृति के विम्बों को ढूँढा है। डॉ. संपूर्णानंद 1953 ई. में लिखते हैं – "साइंस फिक्शन (वैज्ञानिक कहानी) लिखने का अभी चलन नहीं है और यह बड़ी कमी है..... इससे वाङ्मय की एक त्रुटि दूर होगी और रोचक भाषा में विज्ञान के गंभीर तत्वों से परिचय होगा।"[8]

इसी प्रकार डॉ. संपूर्णानंद विज्ञान गल्प की सीमाएँ जानते थे और इसके लेखन में क्या-क्या कठिनाइयाँ हैं, वे उनको भी इंगित करते हैं – "ऐसे वाङ्मय की रचना के मार्ग में कई गहन कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं। विज्ञान की गूढ़ बातों को किस्सा कहानी के ढंग पर कहना सुखकर नहीं होता है और यदि उनकी विशद व्याख्या की जाय तो वह विज्ञान की पाठ्य पुस्तक का रूप ले लेता है। इससे उद्देश्य की हानि होती है। हिंदी में लिखने वालों को एक और विपत्ति का सामना करना होगा। पाश्चात्य देशों में साधारण जनता का सामान्य ज्ञान बढ़ा हुआ है। हमारे यहाँ अच्छे पढ़े-लिखे व्यक्ति भी विज्ञान के प्रारम्भिक ज्ञान तक से बहुधा वंचित रहते हैं।"[9]

आचार्य चतुरसेन शास्त्री द्वारा लिखित वैज्ञानिक उपन्यास 'खग्रास' उनकी प्रखर प्रतिभा का प्रमाण है। इसके कथानक में 'विज्ञान' पर अत्यधिक जोर दिया गया है, जिससे कथानक एकपक्षीय नजर आता है। इसके बावजूद इन्होंने तत्कालीन समाज की विभिन्न घटनाओं को समेटते हुए वैज्ञानिक प्रगति को दर्शाया है। हिंदी विज्ञान कथा की परंपरा में इस वैज्ञानिक उपन्यास का महत्वपूर्ण योगदान है।

हिंदी साहित्य की विधा विज्ञान कथा की इस समृद्ध परंपरा में डॉ. ओमप्रकाश शर्मा ने कई वैज्ञानिक उपन्यासों का सृजन किया है, यथा - 'मंगल यात्रा' (1959 ई.), 'युग मानव' (1981 ई.), 'जीवन और मानव', 'गाँधीयुग पुराण' आदि। इनके वैज्ञानिक उपन्यासों में पाश्चात्य विज्ञान कथा का प्रभाव दिखाई पड़ता है। लेकिन इसमें निहित भारतीय तत्वों का सम्मिश्रण इनकी अपनी विशेषताएँ हैं। इनके वैज्ञानिक उपन्यास पौराणिक संकल्पनाओं से गुथे हुए हैं। डॉ. ओमप्रकाश शर्मा की वैज्ञानिक दृष्टि का मूल्यांकन करते हुए शुकदेव प्रसाद का कहना है – "विज्ञान कथाकार का यह भी दायित्व है कि विज्ञान के भावी खतरों से लोक मानस को आगाह भी करता चले। इस काम को डॉ. शर्मा ने बखूबी के साथ किया है।"[10]

डॉ. ओमप्रकाश शर्मा के सभी वैज्ञानिक उपन्यासों में 'मंगल यात्रा' (1959 ई.) सर्वाधिक प्रसिद्ध है, क्योंकि इस उपन्यास में उन्होंने विज्ञान के प्रभाव व दुष्प्रभाव दोनों पक्षों की चर्चा बखूबी के साथ की है। डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' इस वैज्ञानिक उपन्यास की भूमिका में लिखते हैं – "लेखक ने वैज्ञानिक कल्पनाओं के आधार पर एक ऐसी कथा की सृष्टि की है, जिससे विज्ञान के गुण और उसके खतरे जनता की समझ में आसानी से आ जायेंगे।... 'मंगल यात्रा' हिंदी उपन्यासों में एक नये क्षितिज का निर्माण करती है।"[11]

1960 के दशक में अन्य प्रसिद्ध हिंदी विज्ञान कथाकारों के साथ रमेश वर्मा का नाम भी उभर कर सामने आया है। इन्होंने अति कुशलता से विज्ञान के विकसित हो रहे फलक को देखा और समझा है और उसे अपने हिंदी विज्ञान कथाओं के कथानक का आधार बना कर उसे विज्ञान कथा के स्वरूप में ढाला भी है। इन्होंने 'सिंदूरी ग्रह की यात्रा' (1961 ई.)' आदि वैज्ञानिक उपन्यास लिखे। इसी दशक में डॉ. दत्त शर्मा के संपादकीय कला एवं उनके विज्ञान कथाओं से सभी रू-ब-रू हुए। इनकी प्रमुख विज्ञान कथाएँ 'प्रयोगशाला में उगते प्राण', 'हरा मानव', (1981 ई.) तथा 'हँसोड़ जीन' (1989 ई.) हैं।

1970 का दशक हिंदी विज्ञान कथा की परंपरा के लिए कई मायने में महत्वपूर्ण रहा था। इस दशक में गुणात्मक रूप में और उसी के अनुपात में मात्रात्मक रूप में खूब विज्ञान कथाएँ लिखी गयीं। इस दशक में जहाँ पर इस परंपरा में कई प्रतिभावान लेखक उभरे, वहीं इन विज्ञान कथाकारों ने अपनी विज्ञान कथाओं द्वारा कई नयी प्रवृत्तियों को इस समृद्ध परंपरा को प्रदान किया। इनमें कैलाश साह, देवेन्द्र मेवाड़ी, शुकदेव प्रसाद आदि प्रतिनिधि हिंदी विज्ञान कथाकार हैं।

कैलाश साह (1939-1978 ई.) एक प्रतिभासंपन्न हिंदी विज्ञान कथाकार हैं। आपने डॉ. नवल बिहारी मिश्र की परंपरा को आगे बढ़ाया है। आपके कई नये विज्ञान कथा संग्रह प्रकाशित हुए हैं। आपकी विज्ञान कथाओं में वैज्ञानिक प्रगति, मानवीय संवेदनाओं के प्रति झुकाव, सुदूर भविष्य की संभावित वैज्ञानिकी, भाषा, शिल्प, शैली के स्तर पर नये मुकाम गढ़ती नजर आती है। आपकी लेखनी का चमत्कार विज्ञान कथा संग्रह 'मृत्युंजयी' (1975 ई.) में देखने को मिलता है। इसमें आपकी प्रसिद्ध विज्ञान कथा 'मृत्युंजयी' के अलावा 'पूर्वजों की खोज', 'टोनी', 'असफल विश्वामित्र', 'सर्वोच्च मानव', 'मैंने तो ऐसा कुछ भी नहीं किया', 'मशीनों का मसीहा', 'जहाज का पंछी' आदि विज्ञान कथाएँ संकलित हैं। अपने इस संग्रह में विज्ञान कथा के उद्देश्य के विषय में आपने कहा है कि "इससे हमारा जन मानस विज्ञान और उसकी संभावनाओं से परिचित होता है... विज्ञान की समझ से अंधविश्वास दूर होते हैं... विज्ञान कथाएँ संभावित भविष्य की ओर संकेत करती हैं और आदमी को भविष्य के गर्भ में छुपे शॉक से भी बचाती हैं।"[12]

विज्ञान कथा लेखन के प्रमुख स्तम्भकारों में देवेन्द्र मेवाड़ी (1975 ई.) भी एक हैं। आपने इसी दशक में विज्ञान कथा लेखन के क्षेत्र में प्रवेश किया और आज भी आप उसी ऊर्जा, श्रद्धा और कड़ी मेहनत से लेखन कार्य में व्यस्त हैं। देवेन्द्र मेवाड़ी का लघु उपन्यास 'सभ्यता की खोज', (1979 ई.) बुद्धिमान मशीनों पर ज्यादा निर्भरता के दुष्प्रभाव की ओर संकेत करती है। देवेन्द्र मेवाड़ी के दो हिंदी विज्ञान कथा संग्रह प्रकाशित हुए हैं 'भविष्य' (1994 ई.) तथा 'कोख' (1998 ई.)। 'भविष्य' कथा संग्रह में आपकी छह विज्ञान कथाएँ सम्मिलित हैं - 'सभ्यता की खोज', 'एक और युद्ध', 'डॉ. गजानन का आविष्कार', 'गुडबॉय मि. खन्ना', 'खेम एंथनी की डायरी' तथा 'भविष्य'। इसी प्रकार 'कोख' विज्ञान कथा संग्रह में सात विज्ञान कथाएँ संकलित हैं। 'कोख', 'अलौकिक प्रेम', 'दिल्ली मेरी दिल्ली', 'पिता', 'चूहे', 'अतीत में एक दिन' और 'अंतिम प्रवचन'। 'कोख' विज्ञान कथा में सामाजिक परिस्थितियों में परखनली शिशु तकनीक पर आधारित कथा है। इससे उत्पन्न कई कानूनी पेचीदगियों को मेवाड़ी जी ने सफलतापूर्वक उजागर किया है। इसी प्रकार आपने 'दिल्ली, मेरी दिल्ली' में दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण पर अपनी लेखनी चलायी है।

1980 के दशक में कई अतिमहत्वपूर्ण विज्ञान कथाकारों का इस परंपरा में आगमन हुआ था। इनमें डॉ. अरविंद, डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय, हरीश गोयल आदि हैं। आप तीनों इस दशक के प्रतिनिधि विज्ञान कथाकार हैं। आपने न केवल गुणात्मक व प्रचुर मात्र में विभिन्न विज्ञान कथाएँ लिखीं, बल्कि काफी लम्बे समय से आ रही विज्ञान कथा की परंपरा को विविध आयामी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आप सबने विज्ञान कथाओं की मूलभूत संवेदनाओं को नये स्वरूप प्रदान करने के साथ उनकी भाषा, शिल्प, शैली में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन किया है। हिंदी साहित्य की विज्ञान कथा की परंपरा आप तीनों प्रमुख विज्ञान कथाकारों का आजीवन ऋणी रहेगी।

डॉ. अरविंद मिश्र हिंदी साहित्य के इस विधा के संदर्भ में गंभीर व्यक्तित्व के धनी हैं। मुझे यह अनुशासन व गंभीरता उनके निजी जीवन की प्रतिक्रिया प्रतीत होती है। डॉ. अरविंद मिश्र का हिंदी विज्ञान कथा में योगदान बहुआयामी है। आपने कई हिंदी विज्ञान कथाएँ लिखने के साथ-साथ आपके विभिन्न पत्रिकाओं में इस विधा पर लगातार लेख प्रकाशित होते रहे हैं। इसके साथ ही साथ विज्ञान कथा आलोचक के रूप में भी आपकी भूमिका इस हिंदी विज्ञान कथा परंपरा में महत्वपूर्ण रही है। विज्ञान कथाओं के प्रचार-प्रसार में आपकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। डॉ. मिश्र की पहली विज्ञान कथा 'गुरु दक्षिणा' (1985 ई.) प्रकाशित होती है, जिसमें अन्य ग्रह के रोबोट शोधार्थी को भी मानवीय संवेदनाओं से युक्त दिखाया गया है। डॉ. अरविंद मिश्र का 'एक और क्रौंच वध' (1998 ई. में) प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में कुल बारह कहानियाँ - 'गुरुदक्षिणा', 'धर्मपुत्र', 'देहदान', 'सम्मोहन', 'राज करेगा रोबोट', 'अछूत', 'अनुबन्ध', 'अंतरिक्ष में कोकिला', 'अंतिम दृश्य', 'ऑपरेशन कामदामन', 'एक और क्रौंच वध' संकलित हैं। भाषा पर अनुशासन के धनी डॉ. अरविंद मिश्र के विज्ञान कथाओं में मानवीय संवेदनाएँ अहम् भूमिका का निर्वहन करती हैं। 'धर्मयुग' में प्रकाशित 'एक और क्रौंच वध' पशु-पक्षियों के प्रति मानवीय संवेदना जागृत करने में सफल रही है। यह अत्यंत मार्मिक कथा है। 'ऑपरेशन कामदामन' व्यवहार विज्ञान पर आधारित कथा है। कथा का नायक कामेश्वर यह पता लगाने की कोशिश करता है कि क्या कामेच्छा को दबाने पर सर्जना में वृद्धि की जा सकती है। डॉ. अरविंद मिश्र देश की एकमात्र हिंदी विज्ञान कथाओं की संस्था 'भारतीय विज्ञान कथा लेखक समिति' के पूर्व सचिव भी रह चुके हैं। आपने हिंदी के विभिन्न नवगठित विज्ञान कथाकारों को एक मंच भी प्रदान किया है।

1990 के दशक में डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय प्रतिनिधि विज्ञान कथाकारों में से एक हैं। आप फैजाबाद में कैंसर शोध संस्थान के पूर्व निदेशक रह चुके हैं। आपने विभिन्न विज्ञान कथा संग्रहों का सृजन किया है। हिंदी विज्ञान कथा साहित्य विधा आपकी सदैव ऋणी रहेगी और वह केवल आपके इस विधा में सृजनात्मक योगदान के लिए ही नहीं, बल्कि आपके लगन व कठोर मेहनत द्वारा सितम्बर 1996 ई. में हिंदी विज्ञान कथाकारों की पहली समिति 'भारतीय विज्ञान कथा समिति' गठित करने के लिए भी ऋणी रहेगी कि आपने इस विधा को और समृद्ध व गतिशील बनाया है। आपकी हिंदी विज्ञान कथाओं में ऐतिहासिकता, वैज्ञानिकता, विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों से युक्त है तथा सहज प्रवाहमयी भाषा व शिल्प, शैली की दृष्टि से सामाजिक रूढ़ियों को दूर करने का प्रयास, पाश्चात्य संस्कृति व समाज का दृश्य, उत्कृष्ट दिखाई पड़ती है।

डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय द्वारा रचित 'वैज्ञानिक लघुकथाएँ' का प्रकाशन 1989 ई. में किया गया था। इस संग्रह में चौंतीस लघुकथाएँ संग्रहित हैं। ये लघु कथाएँ पाठक को पर्यावरण, प्रदूषण, स्वास्थ्य, अंधविश्वासों, पुरा मान्यताओं पर सहज भाषा में सूचनाएँ प्रदान करती हैं। इस संग्रह की कुछ लघुकथाएँ कृत्रिम वर्षा, कार्बन डेंटिग, स्वेच्छा मृत्यु, टेस्ट ट्यूब बेबी आदि भविष्य के घटनाक्रमों पर प्रकाश डालती हैं।

आपकी 'आधुनिक विज्ञान कथाएँ' विज्ञान कथा संग्रह 1991 ई. में प्रकाशित होती है, जिसमें सोलह विज्ञान कथाएँ संग्रहित हैं। इनमें लगभग सभी विज्ञान कथाओं का परिवेश पाश्चात्य समाज से जुड़ा हुआ है। प्रसिद्ध विज्ञान कथाकार हरीश गोयल इन कथाओं के विषय में कहते हैं – "सभी कथाओं में नये विषय लिए गये हैं। ये विषय अब तक अछूते रहे थे। विज्ञान कथाओं में इनका पहली बार प्रयोग हुआ है। इन कथाओं में बड़े रहस्यमय ढंग से कई प्रकार की गुत्थियाँ उजागर होती हैं, जिससे इन कथाओं में गहरी संवेदनाएँ होती हैं।"[13]

हिंदी विज्ञान कथा को अपने श्रम, सृजन एवं विलक्षण मेधा से सिंचित करने वाले लेखकों में हरीश गोयल का नाम भी खूब प्रसिद्ध है। इनका विज्ञान कथा संसार व्यापक है। इन्होंने कई हिंदी वैज्ञानिक उपन्यास और विज्ञान कथा संग्रहों का सृजन किया है। हरीश गोयल नवीनतम वैज्ञानिक खोजों एवं तकनीकी प्रगतियों पर सूक्ष्म नजर रखते हुए उसे अपने कथानक का आधार बनाते हैं।

हरीश गोयल के कुल 11 विज्ञान कथा संग्रह प्रकाशित हुए हैं - 'तीसरी आँख' (1989 ई.), 'अजनवी' (2000 ई.), 'मानव क्लोन तथा तृतीय विश्वयुद्ध' (2000 ई.), 'सभ्यता की खोज' (2003 ई.), 'पाँचवाँ आयाम' (2004 ई.), 'कायांतरण' (2004 ई.), 'भविष्य की विलक्षण आँखें' (2004 ई.), 'ऑपरेशन जेनेसिस' (2004 ई.), 'रहस्यमयी ट्राइएंगल' (2004 ई.) 'रहस्यमयी खेती' (2004 ई.), 'ऑपरेशन मार्स' (2004 ई.)।

'कायांतरण' वुल्फ मैन पर आधारित कथा है। ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट का उपयोग कर व्यक्ति जेनेटिक दवा पीकर भेड़िये में बदल जाता है तथा शहर में दहशत फैलाता है। 'किराये की कोख' परखनली शिशु पर आधारित कथा है। 'ममत्व' में बुद्धि जीन का बच्चे पर असर को बताया गया है। यह एक अत्यंत मार्मिक कथा है। 'विपाशन' अपराध विज्ञान पर आधारित कथा है। कथा 'एन्काउंटर' में अंतरिक्ष यात्री जीवन की खोज करने के लिए एरिस्कार्टस यान में आगे बढ़ रहे होते हैं कि उनका सामना आक्रांताओं से होता है।

समकालीन विज्ञान कथा साहित्य को गौर से देखने पर हम पाते हैं कि 1990 के दशक के प्रतिनिधि हिंदी विज्ञान कथाकार आज भी पूरी श्रद्धा, समर्पण और निष्ठा के साथ हिंदी साहित्य के इस विधा को निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं। इसके साथ ही इनसे प्रेरित होकर नये-नये प्रतिभावान विज्ञान कथाकार भी इस लेखन विधा की परंपरा में उभर रहे हैं, जो इस विधा के लिए शुभ संकेत है। ये नये विज्ञान कथाकार कथानक के विषय-वस्तु में, उसके शिल्प, शैली, भाषा, विज्ञान कथा के मानवीय संवेदनाओं, समाज की समस्याओं आदि से संबंधित विभिन्न प्रयोग करते देखे जा सकते हैं। इन नये प्रतिभावान विज्ञान कथाकारों में जीशान हैदर जैदी, मनीष मोहन गोरे, जाकिर अली रजनीश, अमित कुमार, डॉ. कल्पना कुलश्रेष्ठ आदि हैं। इनके योगदान की चर्चा क्रमवार करना उचित होगा।

जाकिर अली रजनीश का एक विज्ञान कथा संग्रह 'निर्णय' प्रकाशित हुआ है। शीर्षक 'कथा निर्णय' में पुत्र की इच्छा रखने वाले दंपत्तियों के लिए एक वैक्सीन की कल्पना की गयी है। कथा में स्त्री के एक्स गुणसूत्र को वाई गुणसूत्र से पृथक कर पुत्र प्राप्ति को आधार बनाया गया है। उनकी 'जरूरत' (1995), 'विस्फोट' (1995), 'चश्मदीद गवाह' (1997) 'एक कहानी' कथाएँ प्रकाशित हुई हैं। रजनीश की एक कहानी 'टाइम मशीन' पर आधारित है। 'विस्फोट' अदृश्यता तथा 'जरूरत' 'रोबोटिक्स' पर आधारित है।

जाकिर अली रजनीश का एक वैज्ञानिक उपन्यास 'गिनीपिग' 1998 ई. में प्रकाशित हुआ था। 'गिनीपिग' में मानव संवेदनाओं के मूल में घटित हो रहे जैव रासायनिक समीकरणों की पड़ताल की गयी है। लेकिन यह प्रथम वैज्ञानिक उपन्यास नहीं है। इससे पूर्व 1984 ई. में हरीश गोयल का 'कालजयी यात्रा' (1984 ई.) उपन्यास प्रकाशित हुआ है और इससे भी पहले कई वैज्ञानिक उपन्यास लिखे गये हैं। राहुल सांकृत्यायन का 'बाईसवीं सदी' प्रथम वैज्ञानिक लघु उपन्यास माना जाता है। जाकिर अली रजनीश की कई बाल विज्ञान कथाएँ भी प्रकाशित हुई हैं। उनमें से प्रमुख हैं - 'सपनों का राजा', 'अकरम और रोबोट' तथा 'मैं स्कूल जाऊँगी'। 1998 ई. में आपकी 'प्रतिनिधि विज्ञान कथाएँ' प्रकाशित हुई हैं।

जीशान हैदर जैदी की 'सिलिकोन मैन' एक ऐसे एलियन का नाम है, जो भाव शून्य है: केवल है एक भावना बोर होने की। 'कम्प्यूटर की मौत' में एक कम्प्यूटर कंपनी से निकाला गया व्यक्ति प्रतिशोध लेता है। 'कार का चक्कर' में आपसी प्रतिस्पर्द्धा के चलते दो कंपनियाँ आपस में भिड़ जाती हैं। 'अनजान पड़ौसी' में एक इनसान एलियन के साथ अपनी भावनाओं का सौदा कर लेता है। 'बौना मामला' में चिंपाजी माँ से पैदा हुआ मानव पुत्र अपने पिता के खिलाफ विद्रोह कर पूरी

प्रयोगशाला को नष्ट कर देता है। 'वैज्ञानिक राजकुमारी' में आयु घटाने की मशीन जब काम करना बंद कर देती है और युवा राजकुमारी बूढ़ी हो जाती है तो उसका पति उसे प्यार का यकीन दिलाता है।

डॉ. कल्पना कुलश्रेष्ठ ने रोबोट, पारलौकिक जीवन और मानव संबंधी विषयों पर हिंदी विज्ञान कथाओं का सृजन किया है। 'उनकी विरासत' (1995), 'राबी' (1996), 'अपराधी' (1997), और 'उस सदी की बात' (1997) उल्लेखनीय हिंदी विज्ञान कथाएँ हैं। 'अपराधी' में नायिका शुभद्रा का मस्तिष्क एक दुर्घटना में पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो जाता है, लेकिन अन्य अंग ठीक तरह से कार्य कर रहे थे। चिकित्सीय दृष्टि से उसे मृत माना जा चुका था। लेकिन प्रयोगशाला में तैयार किये गये न्यूगेन रासायनिक संकेतों के स्थान पर क्षीण विद्युत संकेत भेजकर कृत्रिम मस्तिष्क को शुभद्रा के मस्तिष्क के स्थान पर प्रत्यारोपित किया गया और शरीर की तंत्रिका कोशिका से जोड़ दिया गया। इसी प्रकार 'संभावित' हिंदी विज्ञान कथा अंतरिक्ष पर आधारित कथा है।

डॉ. कल्पना कुलश्रेष्ठ ने 'उस सदी के बाद में' 21वीं सदी के परमाणुविक जैविक युद्ध के बाद विनष्ट सभ्यता, जो 26वीं सदी में विकास का स्तर पाती है, की कल्पना की है। इस सदी में सब कुछ कम्प्यूटर संचालित है। ऐसे समाज में विकलांगता को कोई स्थान नहीं अर्थात् ऐसे लोगों के लिए कोई दया या करुणा जैसी मानवीय संवेदना नहीं है। मनुष्य एक बुद्धिमान रोबोट मात्र बनकर रह जाता है। 'विरासत' 'हिमीकरण' पर केन्द्रित विज्ञान कथा है। राजशेखर भूसनूर मठ ने 'शवों के रहस्य' में भी कृत्रिम मस्तिष्क के प्रत्यारोपण की परिकल्पना की है।

एक विज्ञान कथाकार को मन से साहित्यकार होना अनिवार्य है। तभी वह विज्ञान जैसे विषयों में संवेदनाएँ पिरो सकता है। साथ ही एक विज्ञान कथाकार के लिए विज्ञान के विषयों की मूलभूत जानकारी भी आवश्यक है। उसे विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में हो रही नित नयी खोजों से वाकिफ होना चाहिए। तभी वह भविष्य की सार्थक कल्पना कर सकता है।

निष्कर्ष : यह हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा विधा का संक्षिप्त इतिहास है। समाज में जैसे-जैसे विज्ञान का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है और उसकी महत्ता से लोग रू-ब-रू हो रहे हैं, वैसे-वैसे अब विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ भी इस विधा को महत्त्व दे रही हैं। इनमें अब इस विधा से संबंधित विभिन्न लेख दिन-प्रतिदिन प्रकाशित हो रहे हैं। यदि 'स्वतंत्र भारत', 'राष्ट्रीय सहारा', 'धर्मयुग', 'जनसत्ता', 'हंस', 'शिविरा' जैसी पत्र-पत्रिकाओं में कभी-कभी विज्ञानकथाओं का प्रकाशन होता है तो सुप्रसिद्ध पत्रिका 'विज्ञान प्रगति' के प्रत्येक अंक में हिंदी के मौलिक विज्ञान कथा व अनूदित विज्ञान कथा बराबर प्रकाशित हो रही है। इसके अतिरिक्त 'विज्ञानकथा', 'विज्ञान आपके लिए' जैसी पत्रिकाएँ लगातार विज्ञानकथाओं का प्रकाशन कर रही हैं। लेकिन यह बात अब भी सोचनीय है कि जो स्थान पाश्चात्य जगत् में विज्ञान कथा व कथाकारों का है, वह स्थान अभी भारत देश में नहीं है। इस यात्रा में हमें कई मंजिलों से गुजरना पड़ेगा, तभी हम वह मुकाम प्राप्त कर सकते हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि इक्कीसवीं सदी के अंत तक यह मुकाम विज्ञान कथा और कथाकार अवश्य ही प्राप्त कर लेंगे।

संदर्भ

[1] पं. शिवगोपाल मिश्र (संपादक), भारतीय भाषाओं में विज्ञान लेखन (लेख), विज्ञान (पत्रिका), प्रकाशक: विज्ञान परिषद प्रयाग, प्रयाग, अंक: 1989, पृष्ठ 32

[2] अजय सिंह, हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा (शोध-प्रबंध), सन् 2002, पृष्ठ 28

[3] राहुल सांकृत्यायन, 'बाईसवीं सदी' प्रकाशक: किताबघर प्रकाशन, प्रयाग, संस्करण: 2012, पृष्ठ 73 (भारतीय विज्ञान कथाएं में संग्रहित), सम्पादक: शुकदेव प्रसाद

[4] *वही*, पृष्ठ 74

[5] गोपाल प्रसाद मिश्र (संपादक), विज्ञान (पत्रिका), अंक: मई 2000, पृष्ठ 4, प्रकाशक: प्रयाग विज्ञान परिषद, प्रयाग

[6] *वही*, पृष्ठ 5

[7] सूर्यकांत साह (अनुवादक), चंद्रलोक की यात्रा, प्रकाशक: इंडियन प्रेस इलाहाबाद, संस्करण: 1961, पृष्ठ 5

[8] गोपाल प्रसाद मिश्र (संपादक), विज्ञान (पत्रिका), अंक: मई 2000, पृष्ठ 4, प्रकाशक: प्रयाग विज्ञान परिषद, प्रयाग

[9] शुकदेव प्रसाद (संपादक), विश्व विज्ञान कथाएँ, प्रकाशक: किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण: 2012, पृष्ठ 22

[10] शुकदेव प्रसाद (संपादक), भारतीय विज्ञान कथाएँ, प्रकाशक: किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण: 2012, पृष्ठ 25

[11] *वही*, पृष्ठ 25

[12] कैलाश साह, मृत्युंजयी (विज्ञान कथा संग्रह की भूमिका), प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण: 1976, पृष्ठ 15

[13] डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय (संपादक), विज्ञान कथा, (त्रैमासिक पत्रिका), प्रकाशक: भारतीय विज्ञान समिति, फैजाबाद, अंक: सितम्बर-नवम्बर 2016 ई., पृष्ठ 29

डॉ. आशीष कुमार यादव
पोस्ट डॉक्टोरल फैलो स्कॉलर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् (ICSSR), शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
asheeshdu8@gmail.com, 9818813985

अपनी माटी (ISSN 2322-0724 Apni Maati)

चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) से प्रकाशित त्रैमासिक ई-पत्रिका

अंक-48, जुलाई-सितम्बर 2023 **UGC Care Listed Issue**

सम्पादक-द्वय : डॉ. माणिक व डॉ. जितेन्द्र यादव चित्रांकन : सौमिक नन्दी

Tags 48 इंटरनेट डॉ. आशीष कुमार यादव विज्ञान शोध हिंदी साहित्य UGC Care Listed Issue

शेयर करें

LINKS TO THIS POST सभी देखें

यह 'अपनी माटी संस्थान' चित्तौड़गढ़ (पंजीयन संख्या 50 /चित्तौड़गढ़/2013) द्वारा संचालित और UGC Care List Approved त्रैमासिक ई-पत्रिका 'अपनी माटी' है जिसका ISSN नंबर 2322-0724 Apni Maati है। कला, साहित्य, रंगकर्म, सिनेमा, समाज, संगीत, पर्यावरण से जुड़े शोध, निबंध, साक्षात्कार, आलेख सहित तमाम विधाओं में समाज-विज्ञान और साहित्य से सम्बद्ध रचनाएँ छपने और पढ़ने हेतु एक मंच है। कथेतर साहित्य छापने में हमारी रूचि है। यहाँ साल में चार सामान्य अंक प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा कभी-कभी विशेषांक भी छपते हैं। यह गैर-व्यावसायिक और साहित्यिक प्रकृति का सामूहिक प्रयासों से किया जाने वाला कार्य है। हमारा पता 'कंचन-मोहन हाऊस,1, उदय विहार, महेशपुरम रोड, चित्तौड़गढ़-312001,राजस्थान' है। अन्य जरूरी प्रश्न हो तो 9001092806 (Jitendra) पर Only Watts App करके सम्पर्क कर सकते हैं, यहाँ कॉल पर बात नहीं होगी। हमारा ई-मेल पता apnimaati.com@gmail.com यह रहेगा। कुल जमा पत्रिका ठीकठाक है इसे बेहतर बनाने का जिम्मा लेखकों और पाठकों पर ही है।

Design by - Shekhar

अनुक्रमणिका : अपनी माटी का 48वाँ अंक

सम्पादक, अपनी माटी शनिवार, सितंबर 30, 2023

चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) से प्रकाशित त्रैमासिक ई-पत्रिका

अपनी स्थापना के 11वें वर्ष में प्रवेश

अपनी माटी

(साहित्य और समाज का दस्तावेज़ीकरण)

इस अंक का चित्रांकन : सौमिक नन्दी

UGC Care Listed

(Under List 'Multi Disciplinary' Sr. Nu. 03)

(ISSN 2322-0724 Apni Maati) अंक-48, जुलाई-सितम्बर, 2023

सम्पादक-द्वय : डॉ. माणिक व डॉ. जितेन्द्र यादव

परामर्श मंडल

डॉ. राजेश चौधरी, अशोक जमनानी, प्रो. गजेन्द्र पाठक, प्रो. पयोद जोशी, प्रो. तनुजा सिंह, प्रो. नीलम राठी, प्रो. मनीष रंजन

डॉ. गजेन्द्र मीणा, डॉ. राजकुमार व्यास, डॉ. विंध्याचल यादव, डॉ. मोहम्मद फ़िरोज़ अहमद

डॉ. मुकेश कुमार मिरोठा, डॉ. दीनानाथ मौर्य, डॉ. जितेंद्र थदानी

सम्पादकीय मंडल

डॉ. सौरभ कुमार, डॉ. प्रवीण कुमार जोशी, डॉ. विष्णु कुमार शर्मा, डॉ. मैना शर्मा, डॉ. गोपाल गुर्जर, डॉ. प्रशान्त कुमार, डॉ. कविता सिंह, अभिनव सरोवा, डॉ. मोहम्मद हुसैन डायर,

डॉ. संदीप कुमार मेघवाल, डॉ. बृजेश यादव, डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंग देवोत, विजय मीरचंदानी, डॉ. संतोष विश्नोई, डॉ. हेमंत कुमार

पोर्टल प्रबंधन एवं प्रकाशन : गुणवंत कुमार, अर्जुन कुमार, दीपक कुमार

डिजायन एवं डिजिटल मार्केटिंग : चंद्रशेखर चंगेरिया (कुमावत)

आर्थिक सहयोग : Apni Maati Sansthan ,A/c. No.: 33444603964, IFSC Code : SBIN0006097

State Bank of India, Branch : Chittorgarh (Rajasthan)

प्रकाशक : 'अपनी माटी संस्थान चित्तौड़गढ़' (पंजीयन संख्या 50 /चित्तौड़गढ़/2013)

सम्पादकीय / पंजीकृत कार्यालय : कंचन-मोहन हाऊस,1, उदय विहार, महेशपुरम रोड, चित्तौड़गढ़-312001,राजस्थान

ई-मेल : apnimaati.com@gmail.com, वेबसाईट : www.apnimaati.com, वाट्स एप : 9001092806

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

- शक्ति की करो मौलिक कल्पना / डॉ. जितेंद्र यादव (1)

वैचारिकी

- मृत्यु दंड के विनाश की सैद्धांतिक व्याख्याओं में 'चाँद' के प्रतिबंधित 'फांसी' अंक का योगदान / प्रो. गजेन्द्र कुमार पाठक एवं विकास शुक्ल (5)
- कथेतर के शिखर-पुरूष : कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' / डॉ. राजकुमार व्यास (10)
- डॉ. शिवप्रसाद सिंह की कहानियाँ : लोक और लोक का संदर्भ / डॉ. सन्तोष विश्नोई (15)
- हिन्दी का आरम्भिक यात्रा-वृत्तान्त और भारतेन्दु हरिश्चंद्र: एक विवेचन / बृजेश कुमार यादव (20)
- आध्यात्मिक विकास की शिक्षा : डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का दृष्टिकोण एवं प्रासंगिकता / डॉ. प्रशान्त कुमार (25)
- समकालीन किसान केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक स्वर / डॉ. जितेंद्र यादव (30)

स्मरण

- दीनदयाल उपाध्याय और एकात्म मानववाद : समकालीन प्रासंगिकता / प्रो. सुमन शर्मा एवं डॉ. जितेन्द्र कुमार पाण्डेय (35)

धरोहर

- संत रविदास के काव्य में मानवीय मूल्यों के प्रति आग्रह / प्रो. राजमुनि (40)
- मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में अर्थ विस्तार / डॉ. शिखा रानी (45)
- अद्‌वैत वेदांत और संत संप्रदाय: तुरसीदास निरंजनी की कविता / डॉ. प्रेम सिंह (50)
- भारतीय अध्यात्मवाद का विश्लेषण / माहिमाइ माण्डि (55)

कथा-संसार

- हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा की परंपरा और स्वरूप का विकास / डॉ. आशीष कुमार यादव (60)
- उत्तर आधुनिकतावाद और उदय प्रकाश की कहानियाँ / डॉ. प्रशांत सरकार (65)
- प्रेमचंद साहित्य : आलोचना के नये परिप्रेक्ष्य / सुनील यादव (70)
- चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में उपस्थित विविध परिदृश्य / आशु मंडोरा (75)

कथेतर का कोना

- मज़हब बदलना आदमी के हाथ में है, बाप बदलना नहीं (डायरी) / डॉ. विष्णु कुमार शर्मा (80)
- गाछ गाथा उर्फ दास्ताने दरख़्त / डॉ. हेमंत कुमार (85)

सिनेमा की दुनिया

- हिंदी सिनेमा और वेश्यावृति : विशेष संदर्भ 'गंगूबाई काठियावाड़ी' / ज्योति यादव (90)
- प्रेमचंद के उपन्यास और उनका फिल्म रूपांतरण / संध्या (95)
- हिंदी बाल सिनेमा और बाल समस्याएं / श्रुति गौतम एवं डॉ. अरुण कुमार मिश्र (100)

पत्रकारिता के पहाड़े

- डिजिटल संचार तकनीक की संभावनाएं और पत्रकारीय चुनौतियां / प्रियंका रंजन और प्रो. उत्तम कुमार पेगु (105)

संघर्ष का दस्तावेज

- हिन्दी साहित्य में विमर्श के दौर में अस्मिता का प्रश्न / राम सुधि (110)
- दलित कविता में अभिव्यक्त रचनात्मक प्रतिरोध : 'सुनो ब्राह्मण' के विशेष सन्दर्भ में / शिवपाल (115)
- भारतीय मुसलमानों में जाति व्यवस्था का विश्लेषण / प्रो. शमीम राईन (120)
- लैंगिकता से परे मनुष्यता की खोज : मैं हिजड़ा... मैं लक्ष्मी ! / डॉ. अमित कुमार (125)

हूल-जोहार

- वैश्विक साहित्य जगत में तेजी से उभरता हुआ आदिवासी साहित्य : एक विवेचनात्मक अध्ययन / डॉ. राकेश सिंह परस्ते (130)
- हिंदी उपन्यासों में आदिवासी समाज की आर्थिक संरचना का विश्लेषणपरक अध्ययन / मनप्रीत कौर एवं डॉ. राजेन्द्र कुमार सेन (135)
- महाराष्ट्र की कोरकू जनजाति में लोक चिकित्सीय संस्कृति / महेंद्र कुमार जायसवाल एवं फरहद मलिक (140)
- हिंदी साहित्य में आदिवासी कविता लेखन / डॉ. राज कुमार मीणा (145)
- 'पठार पर कोहरा' उपन्यास में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन संघर्ष / शुभम यादव (150)

समानांतर दुनिया

- वैदिक साहित्य में स्त्री-स्वर : एक अवलोकन / ममता दीपक वेर्लेकर (155)
- बंकिमचंद्र और हिन्दी के आरम्भिक उपन्यासों के स्त्री प्रश्न / प्रीती सिंह पटेल (160)
- 'फ़रिश्ते निकले' : स्त्री संघर्ष का आख्यान / गुड़िया बानो (165)

विरासत

- उत्तर प्रदेश के निज़ामाबाद क्षेत्र की कुम्भकारी कला के विविध आयाम - काले मृदभांड कलाकृतियों के सन्दर्भ में विश्लेषणमात्मक अध्ययन / पल्लवी सोनी (170)
- चंदौली जनपद(उत्तर प्रदेश) की चकिया तहसील की शैल-कला : एक अध्ययन / डॉ. राजीव जायसवाल, डॉ. दिलीप कुमार संत एवं अन्य (175)
- द्‌वितीय अफ़ग़ान साम्राज्य की स्थापना में चुनार किले का महत्व / स्मिता पटेल (180)
- संस्कृत साहित्य में वृत्तियों का विवेचन / डॉ. अश्विता त्रिपाठी (185)
- सौन्दर्य, सौन्दर्यशास्त्र और मोहन राकेश का 'आधे-अधूरे' / डॉ. महेश चन्द्र तिवारी (190)
- विभिन्न हठयौगिक ग्रंथों में वर्णित नेतिकर्म की उपयोगिता / सेतवान, डॉ.राकेश गिरी एवं डॉ.ऊधम सिंह (195)

लोक का आलोक

- भक्ति आन्दोलन में संत जम्भो जी का योगदान / प्रो. गीता कपिल (200)
- मध्यकालीन कुमाउनी कवियों के काव्य में प्रकृति का मानवीकरण रूप / डॉ. डिम्पल जोशी (205)
- भारत के प्रमुख प्रादेशिक लोकनाट्य में परम्पराओं का अनुशीलन / प्रियंका राजेद्र प्रसाद चौहान (210)
- मानसिक स्वास्थ्य के अध्ययनों में नवीन प्रवृत्तियाँ / अरुण कुमार चतुर्वेदी एवं प्रो. टी.सी. पाण्डेय (215)
- उत्तराखण्ड की लोक सांगीतिक विरासत के संवाहक समुदाय और उनकी व्यावसायिक परम्पराएं / रविन्द्र कुमार स्नेही (220)

अनकहे-किस्से

- सोनामाटी उपन्यास में ग्राम्य जीवन का यथार्थ और सामाजिक चेतना / डॉ. मीनाक्षी चौधरी (225)
- सेज पर संस्कृत : भूमंडलीकरण, धर्म और स्त्री सन्दर्भ / डॉ. वीरेंद्र प्रताप (230)
- हिंदी उपन्यास में अभिव्यक्त दिल्ली शहर और साहित्य के अंतर्संबंध / शाहीन (235)

देशांतर

- भारत और ग्वाटेमाला की आदिवासी कविताओं में वेदना और विद्रोह : एक तुलनात्मक अध्ययन / डॉ. अश्वनी कुमार (240)
- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में प्रवासी भारतीयों का योगदान : अमेरिका के विशेष संदर्भ में / अनूप सिंह कुशवाहा एवं डॉ नरेंद्र कुमार सिंह (245)

कवितायन

- भावबोध का सूक्ष्म अंकन : विनोद पदरज की कविताओं के विशेष सन्दर्भ में / डॉ. लोकेन्द्र कुमार (250)
- अनामिका : दिगंत नापने वाली कवयित्री / डॉ. प्रियदर्शिनी (255)
- काव्य-भाषा की कसौटी और कुँवर नारायण का काव्य-लोक / डॉ. प्रवीण कुमार (260)
- न होने में होने की तलाश का कवि आत्मा रंजन / वीरेंद्र सिंह (265)

नीति-अनीति

- उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों में समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन / रमाकान्त यादव एवं डॉ. दिलीप कुमार सिंह (270)
- अल्मोड़ा नगर पालिका अध्यक्ष के रूप में मुंशी हरिप्रसाद टम्टा के कार्यों का मूल्यांकन : एक अध्ययन / माला एवं प्रो. संजय कुमार टम्टा (275)
- सीखने की भाषा : मुद्दे और चुनौतियाँ / डॉ. कंचन सिंह (280)
- कक्षा पाँच की पर्यावरण अध्ययन पुस्तक का पर्यावरण शिक्षा के सन्दर्भ में विषयवस्तु विश्लेषण / मिली सिंह एवं डॉ. रिंकी (285)
- मतदान व्यवहार व भारत में चुनावी अध्ययन का विकास : सैद्धांतिक अध्ययन / राकेश कुमार (290)

रंगायन

- जगदीशचंद्र माथुर और मोहन राकेश के ऐतिहासिक नाटकों में आधुनिकताबोध / सुरभि नामदेव एवं डॉ. धीरेन्द्र शुक्ल (295)

अध्यापकी का अनुभव

- साथी हाथ बढ़ाना / डॉ. मोहम्मद हुसैन डायर (300)

('अपनी माटी' के 48 वें नंबर की सभी पीडीएफ यहां उपलब्ध हैं)

*सभी कानूनी विवादों के लिये क्षेत्राधिकार चित्तौड़गढ़, राजस्थान होगा। प्रकाशित सभी सामग्री के विषय में किसी भी कार्यवाही हेतु संचालक/संचालकों का सीधा उत्तरदायित्व नही है अपितु लेखक उत्तरदायी है। आलेख की विषयवस्तु से संचालक की सहमति/सम्मति अनिवार्य नहीं है। यदि कोई भी असंवैधानिक सामग्री प्रकाशित हो जाती है तो वह तुंरत प्रभाव से हटा दी जाएगी। पाठक कोई भी आपत्तिजनक सामग्री पाते हैं तो तत्काल सूचित करिएगा।

Tags 48 48 Cover Page UGC Care Listed Issue

शेयर करें

LINKS TO THIS POST

सभी देखें

‹ और नया

पुराने ›

यह 'अपनी माटी संस्थान' चित्तौड़गढ़ (पंजीयन संख्या 50 /चित्तौड़गढ़/2013) द्वारा संचालित और UGC Care List Approved त्रैमासिक ई-पत्रिका 'अपनी माटी' है जिसका ISSN नंबर 2322-0724 Apni Maati है। कला, साहित्य, रंगकर्म, सिनेमा, समाज, संगीत, पर्यावरण से जुड़े शोध, निबंध, साक्षात्कार, आलेख सहित तमाम विधाओं में समाज-विज्ञान और साहित्य से सम्बद्ध रचनाएँ छपने और पढ़ने हेतु एक मंच है। कथेतर साहित्य छापने में हमारी रूचि है। यहाँ साल में चार सामान्य अंक प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा कभी-कभी विशेषांक भी छपते हैं। यह गैर-व्यावसायिक और साहित्यिक प्रकृति का सामूहिक प्रयासों से किया जाने वाला कार्य है। हमारा पता 'कंचन-मोहन हाऊस,1, उदय विहार, महेशपुरम रोड़, चित्तौड़गढ़-312001,राजस्थान' है। अन्य जरूरी प्रश्न हो तो 9001092806 (Jitendra) पर Only Watts App करके सम्पर्क कर सकते हैं, यहाँ कॉल पर बात नहीं होगी। हमारा ई-मेल पता apnimaati.com@gmail.com यह रहेगा। कुल जमा पत्रिका ठीकठाक है इसे बेहतर बनाने का जिम्मा लेखकों और पाठकों पर ही है।

Design by - Shekhar मुख्य पृष्ठ फॉण्ट कन्वर्टर रेणु विशेषांक मीडिया विशेषांक किसान विशेषांक तुलसीदास विशेषांक शिक्षा विशेषांक प्रतिबंधित साहित्य विशेषांक

ISSN : 2320-7604
RNI NO. : DELHIN/2008/27588
UGC Care Approved Research journal
October, 21, Part 1, Serial.No. 143

त्रैमासिक

बहुरि नहिं आवना

अंक-24
जुलाई, 2023 - सितंबर, 2023
मूल्य : 200 रुपए

आजीवक महासंघ ट्रस्ट द्वारा निर्गत

संस्कृति, धर्म, दर्शन और साहित्य

प्रधान संपादक
प्रो. श्यौराज सिंह 'बेचैन'
संपादक
प्रो. दिनेश राम
सहायक संपादक
डा. अनिरुद्ध कुमार 'सुधांशु'
तान्या लाम्बा
भाषा सहयोग
डा. हेमंत कुमार 'हिमांशु'
डा. राजकुमार राजन
कानूनी सलाहकार
एड. सतपाल विर्दी
एड. संदीप दहिया
संपादकीय सलाहकार एवं विषय विशेषज्ञ
डा. बी. पी. सिंह, प्रो. राजेन्द्र बड़गूजर, बलबीर माधोपुरी, प्रो. फूलबदन, प्रो. नामदेव, प्रो. सुजीत कुमार, डा. चन्देश्वर, डा. दीनानाथ, डा. मोहन चावड़ा, विजय सौदायी, डा. यशवंत बीरोदय, डा. सुरेश कुमार, डा. मनोज दहिया
अप्रवासी समाज, संस्कृति और साहित्य के विशेषज्ञ
ओमप्रकाश वाघा, नरेन्द्र खेड़ा, राम बाबू गौतम, डा. गुलशन नजरोवना जुगुरोवा, डॉ. बयात रहमातोव, डा. सिराजुद्दीन नूरमातोव

वर्ष : 15
अंक : 24
अंक : जुलाई, 2023 - सितंबर, 2023
संस्थाओं के लिए प्रति कापी : 100 रुपए
वार्षिक सदस्यता शुल्क : 3000 रुपए
आजीवन सदस्यता : 10000 रुपए

संपादकीय पता
जे-5, यमुना अपार्टमेंट,
होली चौक, देवली,
नई दिल्ली-110080
मोबाइल : 09868701556
Email: bahurinahiawana14@gmail.com
Website-www.bahurinahiawana.in

Advertisement Rate
Full Page Rs. 20,000/-
Half Page Rs. 10,000/-
Qtr. Page Rs. 5,000/-
Back Cover Rs. 40,000/- (four colour)
Inside Front Rs.35,000/- (four colour)
Inside Back Rs. 35,000/- (four colour)

Mechanical Data
Overall Size 27.5 cms x 21.5 cms
Full Pages Print Area 24 cms x 18 cms
Half Page 12 cms x 18 cms or
24 cms x 9 cms
Qtr Page12 cms x 9 cms

- पत्रिका पूरी तरह अवैतनिक और अव्यावसायिक है।
- पत्रिका से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।
- अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है।
- 'बहुरि नहिं आवना' के सारे भुगतान मनीआर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट 'बहुरि नहिं आवना' के नाम से स्वीकृत किये जायेंगे।
- स्वामी, संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक प्रो. दिनेश राम की ओर से भारत ग्राफिक्स, सी-83, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-20 द्वारा मुद्रित एवं एफ-345, लाडो सराय, नई दिल्ली- 30 से प्रकाशित।
- 'बहुरि नहिं आवना' में प्रकाशित लेखों में आये विचार लेखकों के अपने हैं जिन से संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

48. पॉल गोमरा का स्कूटर : भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में बदलते मानवीय मूल्य —रवि रंजन —डॉ. उपेंद्र कुमार 176
49. समकालीनता के संदर्भ में अनामिका की कविताओं का मूल्यांकन —राहुल कुमार —डॉ. उपेंद्र कुमार 180
50. हिंदी विज्ञान कथाओं की सामाजिक उपादेयता —डॉ. आशीष कुमार यादव 184
51. अखिलेश के कथा साहित्य में विविध आयामों की अभिव्यक्ति के सामाजिक पक्ष का विवेचनात्मक अध्ययन —डॉ. प्रदीप कुमार तिवारी 188
52. हिन्दी व्याकरणिक चिन्तन की परम्परा का विश्लेपणात्मक अध्ययन —डॉ. कृपा शंकर 192
53. हिन्दी सिनेमा और स्त्री चिंतन —सचिन पाल सिंह 195
54. वर्ष 1980-84 के समय भारत की दक्षिण एशिया के प्रति सांस्कृतिक विदेश नीति —डॉ. दीपक सिंह 198
55. कथाकार संजीव कृत उपन्यास 'धार' में आदिवासी जीवन : एक दृष्टि —अनुपमा वर्मा —डॉ. अखिलेन्द्र प्रताप सिंह 201
56. बुनकरों की निर्धनता की समस्या एंव आर्थिक सुधार में स्वंय सहायता समूहों का योगदान —शील कुमार —डॉ. आदित्य कृष्ण सिंह चौहान 205
57. आचार्य शुक्ल के मनोविकार सम्बन्धी निबन्धों का मूल्यांकन —आलोक कुमार 208
58. ब्रिटिश शासनकाल में सन् 1857 का विद्रोह : एक दृष्टि —डॉ. अंकिता सिंह 212
59. आधुनिक समाज में वृद्धजनों की दशा : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन —आशीष कुमार चौरसिया 216
60. संयुक्त राष्ट्र संघ और महिला उत्थान —पूरनमल मीना 220
61. शिक्षण प्रभावशीलता के माध्यम से मध्यप्रदेश के जनजातीय छात्रों में सांस्कृतिक, भाषायी व राजनैतिक परिवर्तन —नवनीत कुमार सिंह —अनुपम सिंह —प्रो. शमीम अहमद 223
62. संत परंपरा में रैदास जी और उनका वैचारिक अवदान —डा. विन्ध्याचल मिश्र 227
63. कल्याणकारी राज्य की स्थापना में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का योगदान —प्रो. शैलेन्द्र सिंह 231
64. उत्तर-आधुनिकता के दर्पण में विमर्श की नई राहें —राम सुधि 234
65. चौखट (कहानी) —रामेश्वर महादेव वाढेकर 239

हिंदी विज्ञान कथाओं की सामाजिक उपादेयता

—डॉ. आशीष कुमार यादव

मानव सामाजिक प्राणी होने के साथ-साथ चेतन प्राणी भी होता है। समाज में स्वातंत्र्य और चेतना के फलस्वरूप वर्तमान समाज का स्वरूप अत्यंत क्लिष्ट हो गया है। समाज के इस स्वरूप के पीछे मुख्य रूप से विज्ञान की प्रगति व प्रौद्योगिकी की प्रगति रही है। वर्तमान समाज में विज्ञान, तकनीकि और प्रौद्योगिकी के विकास से समाज काफी बदला है। साहित्य और विज्ञान के बीच परस्पर संबंध आज के युग में और महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि वर्तमान सदी विज्ञान व प्रौद्योगिकी की सदी है। विज्ञान ने समाज व मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है। साहित्य ने विज्ञान को जहाँ पर नयी कल्पनाओं व संवेदनाओं से युक्त किया है, वहीं विज्ञान ने साहित्य को तार्किक, वैज्ञानिक और आधुनिकताबोध से युक्त किया है।

मानव चेतन प्राणी है। मानव का सारा 'चैतन्य' उसे तमस के अधोगामी पतन से उबारकर सत्वस्थ उर्ध्वगामी बनाए रखने के लिए सदा से प्रयासरत रहा है। मानव में जब से बुद्धि जाग्रत हुई है तब से कालखण्ड के हर मोड़ों पर मानव ने 'व्यक्ति' और 'परिवेश' के बीच सार्थक संबंधों की तलाश अनिवार्य रूप से की है और उससे उत्पन्न अनुभूतियों को अभिव्यक्ति दी है। यह 'तलाश' उद्घोषित रूप में मानवता के कल्याण, विकास एवं सुख के लिए रही है। इसी तलाश के परिणामस्वरूप 'विज्ञान' का विकास हुआ। इसी तलाश से प्रभावित-प्रेरित होते हुए और बल पाकर आज हम विकास और प्रगति के इस सोपान तक पहुँचे हैं। दूसरी तरफ अनुभूतियों के अभिव्यक्ति का संकलन 'साहित्य' कहलाया। यह साहित्य आज तक पूरी निष्ठा के साथ मानवता के कल्याण एवं पोषण से जुड़ा हुआ है। उल्लेखनीय है कि विज्ञान के विकास से मशीनों का आविष्कार हुआ। औद्योगीकरण की शुरुआत हुई और आधुनिक युग की रूपरेखा तैयार होने लगी। वैज्ञानिक युग तक आते-आते विज्ञान के विकास ने अपनी पूरी रफ्तार पकड़ ली। इसने न केवल देश-दुनिया की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक सोच में बदलाव लाया वरन् साहित्य जगत् को भी बहुत गहरे प्रभावित किया। जीवन-शैली, रचनाशैली, मुद्रण-शैली और दृष्टिकोण के निर्माण आदि में विज्ञान और वैज्ञानिक गतिविधि ने हिन्दी ही नहीं वरन् समग्र वैश्विक साहित्य को अनेक आयामों में बहुविध प्रभावित किया। हिन्दी साहित्य ने भी विज्ञान की महत्ता को समझा। उसके चतुर्दिक प्रभाव को महसूस किया। उसकी सर्वव्यापी पहुँच से अवगत होकर उसे विषयवस्तु के

रूप में अपनाया और उसे एक विधा (विज्ञानकथा) के रूप में स्थान दे दिया, क्योंकि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से दोनों के उद्देश्य एक ही हैं और वह है मानव कल्याण। 'विज्ञानकथा' नामक इस विधा के रूप में साहित्य और विज्ञान की मित्रता हमारे सामने आई और इसी मैत्री संबंध के संदर्भ में विज्ञानकथा की उपादेयता और प्रासंगिकता स्पष्ट होती है। इस अध्याय में विज्ञानकथाओं की उपादेयता और प्रासंगिकता को रेखांकित करने का प्रयास किया जा रहा है।

विज्ञानकथा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण सामाजिक उपादेयता विज्ञान का प्रकारान्तर से वैज्ञानिक अनुसन्धानों को एक सुनिश्चित दिशा देने की क्षमता के रूप में उजागर होती है। विज्ञानकथाओं में भविष्योन्मुखी कल्पना होती है जो आगे चलकर सच सावित हो सकती है। लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि वह सत्य ही सावित हो। यह सम्भावना से अधिक संभाव्य सत्य पर आधरित होती है। विज्ञानकथा या तो सृजनात्मक, सुन्दर, सुखमय भविष्य का वर्णन कर आशान्वित प्रेरणाप्रद होती है या वैज्ञानिक आविष्कारों के दुरुपयोग के दुष्परिणामस्वरूप द्वारा विध्वंस, विनाशमय एवं त्रस्तकारक भविष्य का भयावह खाका खींचते हुए निराशावादी होती है। हालांकि वैज्ञानिक आविष्कार का भला बुरा होना 'उपयोगकर्त्ता के विवेक' पर निर्भर होता है परन्तु अपने स्वरूप के द्वारा ही 'विज्ञान-कथा' वैज्ञानिकों को शिवत्व की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देने का श्लाघ्य कार्य करती है।

हमारी आज की अनेक सामाजिक समस्याओं के हल के वीज विज्ञान-कथाओं की अति विशाल उर्वर कल्पना-भूमि में छिपे पड़े हैं। जनसंख्या की अधिकता से लड़ने के लिए अंतरिक्ष में कृत्रिम मानव बस्तियाँ स्थापित कर जनसंख्या का स्थानान्तरण, प्रदूषण की भयावहता देखते हुए पर्यावरण की स्वच्छता बनाये रखने के लिये धरती के औद्योगिक कारखानों का अंतरिक्ष में संस्थापन, कच्चे माल के लिए पृथ्वी से चुकते भण्डारों की जगह समुद्र या चंद्रमा की धरती से प्राप्य संसाधनों का दोहन आदि ऐसी संभावनाएँ हैं, जिन्हें रेखांकित कर विज्ञान कथायें कल का सच वना सकती हैं। इन्हीं प्रेरणाओं के परिणामस्वरूप वायुयान, रॉकेट, रोबोट आदि से लेकर संचार-उपग्रह तक निर्मित हुए हैं। हम उम्मीद कर सकते हैं कि आगामी भविष्य में आने वाले जनसंख्या संकट, खाद्यान्न संकट, पर्यावरण संकट आदि तमाम विपत्तियाँ जो कि मानवहित में बाधक हैं, 'विज्ञान कथाओं' के जरिये समय रहते ही निवारित होंगी और यही उनकी सबसे वड़ी उपादेयता है। विज्ञान कथा के कई अन्य महत्वपूर्ण पहलू हैं। जैसे 'विज्ञान कथा' लोगों को शिक्षा देने का कार्य भी करती है और लोगों को अधुनातन आविष्कारों से, उनके प्रभावों से परिचित कराती है। 'विज्ञान कथा' का एक गौण उद्देश्य मनोरंजन तो होता ही है, साथ ही वह विज्ञान का प्रचार-प्रचार भी करती है। आइजक आसिमोव का मानना था—"विज्ञान कथा 'साहित्य' की वह विधा है जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में संभावित परिवर्तनों के प्रति मानवीय प्रतिक्रियाओं को अभिव्यक्ति देती है।"[1] चूंकि शुद्ध विज्ञान में नीरसता एवं दुरुहता होती है इसलिए सामान्य जनवर्ग इसे आसानी से आत्मसात नहीं कर पाता है। इसी नीरसता एवं दुरुहता को 'कथा' अपने लालित्य में समाहित कर अत्यन्त कम कर देती है और विज्ञान को अत्यन्त सरस, सरल, ग्राह्य, भावप्रवण बनाकर सामान्य जन के समक्ष प्रस्तुत करती है। इसमें कौतुहल उत्पन्न करने के साथ-साथ मानवीय समस्याओं के निवारणार्थ एक सुन्दर कथा के रूप में विज्ञान को प्रस्तुत किया जाता है जिसे पाठक आसानी से आत्मसात् कर लेता है। इसी प्रकार 'विज्ञान व्याख्यान' एवं 'विज्ञान कथा' में अंतर होता है। जहाँ 'विज्ञान व्याख्यान' केवल जिज्ञासु एवं इच्छुक लोगों की ही जिज्ञासा का निवारण कर ज्ञान देता है वहीं 'विज्ञान कथा' सामान्य जन को आकर्षित कर उन्हें विज्ञान से रू-व-रू कराती है और उनमें वैज्ञानिक प्रवृत्ति को अंकुरित एवं विकसित करती है। हमारे संविधान के मूल कर्तव्यों में एक कर्तव्य 'वैज्ञानिक दृष्टि' के प्रगति एवं विकास का भी है और इस दृष्टि से 'विज्ञान कथाएं' सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपादेय व प्रासंगिक हैं।

विज्ञान कथाएँ समाज को विज्ञान की शिक्षा देने के साथ-साथ उनमें विज्ञान एवं वैज्ञानिक प्रगतियों के प्रति रुझान पैदा करने का कार्य भी करती हैं। क्योंकि जितने भी महत्वपूर्ण एवं खर्चीले वैज्ञानिक अनुसन्धान होते हैं वे हालांकि मानवहित के लिए ही होते हैं परन्तु उनके लिए पैसा सामान्य जन से ही आता है। इसलिए ऐसे अनुसन्धनों के लिए जनसमर्थन आवश्यक है। विज्ञानकथाओं का एक अप्रत्यक्ष कार्य इस जनसमर्थन को जुटाना भी है।

विज्ञान कथाओं की एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक उपादेयता यह भी है कि वे पाठक की कल्पना शक्ति को उद्‌बुद्ध करती है। लेखक की अनंत कल्पना से पाठक वर्ग का वैचारिक क्षितिज और दृष्टिकोण विस्तारित होता है। ये कार्य मनोरंजन के साथ-साथ संपन्न होते हैं। क्योंकि एक तो यह साहित्य का गुण भी है और विज्ञानकथा साहित्य का अंग है। बल्कि दूसरे मनोरंजन से विहीन होकर 'वह' विज्ञानकथा नहीं वैज्ञानिक प्रवंध मात्र रह जायेगी।

विज्ञान कथाओं का एक गुरुत्तर सामाजिक दायित्व मानवता पर मंडराती भयानक विभीपिकाओं से सतर्क करना

है। न्यूक्लियर विस्फोट, वातावरण प्रदूषण, जनसंख्या विस्फोट, पारिस्थितिक असंतुलन, मानव क्लोनिंग के खतरे, ऊर्जा भंडारों का क्षय, भुखमरी, अकाल, बाढ़, महामारी जैसे अनेकानेक प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष समस्यायें हैं जिनके चंगुल से मुक्ति दिलाने में विज्ञान कथाओं की चेतावनी सार्थक सिद्ध हो सकती है। इन समस्याओं की भयावहता विज्ञान कथायें उजागर कर सकती हैं जिनकी पहचान के बाद हम उनसे जूझने की प्राथमिकतायें निर्धारित कर सकते हैं। इन विशाल उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मनुष्य में एक नई चेतना, एक नये स्वस्थ वैचारिक धरातल की सृष्टि का कार्य यह विज्ञान कथाएँ सफलतापूर्वक कर सकती हैं। इस प्रकार समय के तीव्र प्रवाह के साथ नई सोचों का निर्माण करना और भविष्य के लिए बेहतर तरीके से तैयार करना विज्ञानकथाओं की महत्वपूर्ण उपादेयता है। विज्ञान कथाएँ आने वाले कल के संभावित परिणामों को आज सामने रखकर वे हमारे 'आज' को भी बुद्धिमत्तापूर्ण जीने लायक बनाने का कार्य करती हैं। युद्ध और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिद्वन्द्विता के विध्वंस-भयावह परिणामों को दिखाकर वे अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में हमें और सहिष्णु बना सकती हैं और संभवतः संपूर्ण विश्वशांति और एक सुखी समाज का निर्माण ही सभी विज्ञानकथाओं का मूलमंत्र है। मानव तथा प्रकृति के संबंधों को सुधारना तो उनका प्रमुख उद्देश्य होता है। इस प्रकार शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का उपदेश देती विज्ञानकथायें एक और बात पर बल देती हैं कि हम इस पृथ्वी के स्वामी नहीं अपितु एक निश्चित अवधि विशेष के लिए ही इसके भण्डारों के उपभोक्ता और संरक्षक हैं। इसलिए नैतिकता की दृष्टि से और व्यावहारिक दृष्टि से हमें इन भण्डारों का मनमाना दोहन और छेड़छाड़ करने का कोई अधिकार नहीं है। इसे हमें भविष्य की आने वाली पीढ़ियों के लिए अमानत के रूप में देखना होगा। यही हमारा कर्तव्य है और इस कर्तव्यबोध को जगाने में विज्ञान कथाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है।

विज्ञान कथाओं की एक अन्य सामाजिक उपयोगिता मानव मन की जिज्ञासा को शांत करना भी है। मानव मन में एक कौतुहल या प्रबल चाह होती है स्वयं के बारे में जानने की और साथ ही भविष्य के बारे में जानने की। इसी उत्सुकता के चलते आज ज्योतिष का एक अलग ही समृद्ध क्षेत्र है और प्राचीन भारतीय वाङ्मय के रूप में 'भृगु संहिता', 'रावण संहिता' तथा 'भविष्य पुराण' आदि कितने ग्रंथ हैं जिनकी 'क्रेज' आज के वैज्ञानिक युग में भी बरकरार है। मेरा कल क्या होगा? मानव जाति के भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है? और यदि आशंकायें, बाधाएँ हैं तो उनको मार्ग से दूर करने के क्या उपाय हो सकते हैं? इन सभी प्रश्नों का उत्तर विज्ञान कथायें प्रदान कर रही हैं क्योंकि वैज्ञानिक और तकनीकी प्रत्ययों के साथ सामाजिक चेतना को गुंफित कर मनुष्य को एक नये युग में प्रवेश की दिशा दे सके, यही तो विज्ञान कथा का एक उद्देश्य भी है और उपयोगिता भी। डॉ. अरविंद मिश्र का कहना है—"विज्ञान और प्रौद्योगिकी की बढ़ती प्रगति से भावी मानव और उसका समाज किस तरह प्रभावित, परिवर्तित हो सकता है, विज्ञान कथाएँ इसका पूर्वावलोकन कराती हैं। इस तरह विज्ञान कथाएँ वास्तव में मानव के 'भविष्य दर्शन' की प्रबल चाह का भी शमन करती हैं।"[2]

जब साहित्य और विज्ञान दोनों लोकहित के अभीष्ट के साथ-साथ व्यक्ति और परिवेश के सार्थक संबंधों की तलाश के लिए सतत् सन्नद्ध हैं तब इनमें आपसी दूरी को कम से कम किया जाना अभीष्ट ही है और 'विज्ञान कथा' विज्ञान तथा साहित्य का संगम कर इनके बीच की दूरी को कम करने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कुल मिलाकर 'विज्ञान कथायें' मूल रूप से समाज के मानव हित से सम्बद्ध है। जब आज रोज नये-नये आविष्कार होते जा रहे हैं तो उनमें मानवीय मूल्यों को खोजना अनिवार्य हो गया है। यह कार्य 'विज्ञान कथा' द्वारा संपादित होता है और इस संदर्भ में वर्तमान युग में विज्ञान की तीव्र गति को देखते हुए 'विज्ञान कथाओं' की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है।

समय के परिवर्तन के कारण विज्ञान कथाओं की संख्या में लगातार बढ़ोतरी होती गयी है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद समाज में शिक्षा का प्रसार बढ़ा है और लोगों ने अपने जीवन को सरल और सुखमय बनाने में विज्ञान का उपयोग किया है। शिक्षा के प्रसार और समाज में विज्ञान की भूमिका को देखते हुए सत्ता पर आसीन सरकारों ने भी इसके विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, जिससे जीवन के लगभग हर क्षेत्र यथा—कृषि, चिकित्सा, अंतरिक्ष, नैनो टेक्नोलॉजी, परमाणु, इंटरनेट, समुद्री खोज आदि क्षेत्रों में नयी-नयी खोजों एवं विकास से पूरा देश करवटें बदलने लगा है। सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति ने देश के प्रत्येक व्यक्ति को आंदोलित किया है। पहले लोग विज्ञान जादूगरी के बारे में सुना करते थे, लेकिन अब विज्ञान के प्रभाव, उससे होने वाले परिवर्तन को देखकर उसके महत्व को समझने लगे हैं और उसका महत्त्वपूर्ण उपयोग अपने निजी जीवन में करने लगे हैं। इस अद्भुत विज्ञान के प्रसाद को हिंदी विज्ञान कथाएँ अपनी कथावस्तु का विषय बनाती हैं, जिससे धीरे-धीरे विज्ञान के तद्नरूप हिंदी विज्ञान

कथाएँ भी समाज और साहित्य का महत्त्वपूर्ण अंग बन गयी हैं और लोग हिंदी साहित्य की इस विधा को गंभीरतापूर्वक आत्मसात् करने लगे हैं।

एक विज्ञान कथाकार को मन से साहित्यकार होना अनिवार्य है। तभी वह विज्ञान जैसे विषयों में संवेदनाएँ पिरो सकता है। साथ ही एक विज्ञान कथाकार के लिए विज्ञान के विषयों की मूलभूत जानकारी भी आवश्यक है। उसे विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में हो रही नित नयी खोजों से वाकिफ होना चाहिए। तभी वह भविष्य की सार्थक कल्पना कर सकता है।

गाँधी जी ने कहा था—"मशीनें इतनी बड़ी नहीं होनी चाहिए जो आम आदमी की पहुँच के बाहर हों और मनुष्यता उनके बोझ के नीचे दब जाए। वैज्ञानिक की हर यात्रा और आयोजन में मनुष्य केंद्रित होना चाहिए। मानवमुखी प्रौद्योगिकी मनुष्यता के सुखद भविष्य की जननी है।"[3]

अतः सूत्र रूप में कहें तो विज्ञान कथाओं की सामाजिक उपयोगिता को निम्न प्रकार रेखांकित किया जा सकता है—

- प्रौद्योगिकी के भावी स्वरूप से मानव के भविष्यगत जीवन पर पड़ने वाले अच्छे-बुरे प्रभावों का एक आकलन प्रस्तुत करना।
- मानव या मानव समाज के प्रति आसन्न संकटों से आगाह करना। इस अर्थ में विज्ञान कथायें भविष्यदर्शी की भूमिका निभाती हैं।
- प्रौद्योगिकी जनित सामाजिक बदलाव के प्रति विचारकों, प्रशासकों और नीति निर्धारकों को समय रहते आगाह करना।
- मानव के बौद्धिक दृष्टिकोण को विस्तीर्ण करना और व्यापक फलक प्रदान करना जिससे सामाजिक व मानवीय उत्थान का मार्ग प्रशस्त हो सके।
- समाज में वैज्ञानिक प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- अंधविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों, रूढ़ मान्यताओं का मूलोच्छेदन करना।
- वैज्ञानिक तथ्यों एवं नूतन अनुसन्धानों की नित प्रति जानकारी उपलब्ध कराना।
- वैज्ञानिकों एवं वैज्ञानिक कार्यों, नवीन शोध अनुसंधानों को व्यापक जनसमर्थन दिलाना।
- स्वस्थ और उपयोगी मनोरंजन प्रदान करना।
- वैज्ञानिक अनुसंधानों को दिशा, लक्ष्य और गति प्रदान करना।
- भविष्य संबंधी मानवीय जिज्ञासा का शमन करना।
- मानवीय कल्पनाशीलता को उद्वेलित व उद्बोधित कर और क्षमता प्रदान करना।
- उत्कृष्ट साहित्य की अभिवृद्धि में निरन्तर योगदान की महती भूमिका का निर्वहन करना।

सन्दर्भ

1. इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सांइस फिक्शन, प्रकाशक, आक्टोपस बुक्स लिमिटेड, लंदन (द्वितीय स्रोत) संस्करण, 1978, पृ. 15.
2. एक और क्रौंच वध, डॉ. अरविंद मिश्र, प्रकाशक, लोक साधना केंद्र, वाराणसी, संस्करण, 2000, पृ. 10.
3. विश्व विज्ञान कथाएँ, संपादक, शुकदेव प्रसाद, प्रकाशक, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 2012, पृ. 15.

—डॉ. आशीष कुमार यादव
पोस्ट डॉक्टोरल फैलो स्कॉलर
(हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली